International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(2): 227-229

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(2): 227-229
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-01-2020
Accepted: 17-02-2020

Dr. JR Kashyap
Associate Professor in Sanskrit
Govt. College Solan Distt. Solan,
Himachal Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. JR Kashyap
Associate Professor in Sanskrit
Govt. College Solan Distt. Solan,
Himachal Pradesh, India

महाकवि भारवि और उनका अर्थगौरवः एक विहंगम दृष्टि

Dr. JR Kashyap

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के नभोमंडल में उदित होकर अपनी प्रकाशमान कवि प्रतिभा की उज्ज्वल आभा से भारतीय साहित्य धरा को भासित करने वाले कवि नक्षत्रों में महाकवि भारवि एक अनुपम् ज्योतिष्मान् नक्षत्र है। उनकी पाण्डित्य पूर्ण काव्य–प्रतिभा के सौरभ को सर्वत्र प्रसारित करने वाली उनकी एक मात्र कृति ''किरातार्जुनीयम्'' है जो विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य बृहत्त्रयी की प्रारम्भिक कड़ी के रुप में विद्वत्समाज में समादृत है। इस अकेली रचना के अद्वितीय गुणों के कारण महाकवि भारवि ने संस्कृत कवियों में अत्यन्त महनीय स्थान प्राप्त किया है। इस कृति का नामकरण भगवान् शंकर और अर्जुन के द्वन्द्व युद्ध की प्रमुख घटना को लेकर किया गया है। परिपक्व एवं कृत्रिम चमत्कारी शैली से अलंकृत करने की पद्धति का प्रारम्भ किरात से ही हुआ है। भारवि ने एक ऐसी शैली को जन्म दिया है जो अलंकारों का बाहुल्य दृष्टिगत होता है। अलंकारों की प्रधानता होने के कारण ही इसे ''अलंकृत या कृत्रिम शैली'' नाम दिया गया है। महकवि माघ तथा श्रीहर्ष जैसे दिग्गज कवि भारवि उद्घाटित इस शैली से प्रभावित हैं अतएव बृहत्त्रयी में 'किरात' का स्थान सर्वोपरि है। अर्थ गौरव की दृष्टि से भी यह कृति समूचे संस्कृत साहित्य में अन्यतम् है। अल्पतम् शब्दों द्वारा विस्तृत अर्थों का प्रकटीकरण ही अर्थ गौरव कहलाता है। इसी शैली का आश्रय लेते हुए कवि ने व्याकरण, राजनीति आदि अति सूक्ष्म, नीरस एवं गम्भीर विषयों को सरस एवं सुन्दर शब्दों द्वारा बोध गम्य बनाया है। भारवि के अर्थगौरवरुप वैशिष्ट्य को निम्नरुपेण प्रस्तुत किया जा रहा है–

भारवि का अर्थगौरवः अर्थगौरव भारवि–काव्य की सर्वतोविशिष्ट विशेषता है। काव्य में कविता का जो उच्च आदर्श प्रस्तुत किया गया है वह वास्तव में अनुपम् एवं अनूठा है। भारवि का व्यक्तिगत अभिमत है कि स्पष्ट वर्णालंकारों से विभूषित, श्रुति सुखद, गम्भीर अर्थों से युक्त पदों वाली तथा शत्रुओं को भी वशीभूत करने वाली वाणी पुण्यवान् व्यक्ति के माध्यम से प्रकट होती है। पुण्यहीनों के मुख से कभी आविर्भूत नहीं होती।[1] इसी प्रकार कविता के गुणों का युधिष्ठिर के मुख से सुन्दर प्रकाशन किया गया है जिसके अनुसार श्रेष्ठ काव्य में पदों की योजना सुस्पष्ट हो, अर्थगाम्भीर्य का सम्यग् निर्वाह हो तथा प्रयुक्त पदों में अभिलषित अर्थ को व्यक्त करने की क्षमता विद्यमान हो।[2] कालिदास की उपमा की भाँति ही विद्वद् वर्ग ने भारवि के अर्थगौरव से विशेषतया प्रभावित होकर ''भारवेरर्थगौरवम्'' की उद्घोषणा करके कवि और कृति दोनों को गौरवान्वित किया है। सीमित शब्दों के माध्यम से विपुल अर्थ को अभिव्यक्त करना अर्थगौरव कहलाता है। किरात में पग–पग पर उक्त वैशिष्ट्य का साक्षत्कार किया जा सकता है। प्रथम सर्ग से ही अर्थगरिमा युक्त पदों का प्राधान्य प्राप्त होने लगता है। सुयोधन की राज्य व्यवस्था सम्बन्धी समस्त सूचनाओं का आकलन करके वनेचर द्वारा युधिष्ठिर के सम्मुख व्यक्त किये गये संदेश में प्रयुक्त ''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम् विनिश्चितार्थमिति वाचमाददे''[3] वाक्य वास्तव में अर्थगौरव का लक्षण ही है। किरात में जीवन के गम्भीर अनुभवों, शाश्वत मूल्यों तथा राजनीति एवं लोकव्यवहार में उपयोगी तथ्यों को अभिव्यक्त करने वाली सैंकड़ों सूक्तियाँ उपलब्ध होती हैं जो अल्पशब्दा होकर भी व्यापक अर्थों को प्रकट करने वाली हैं। ये सूक्तियाँ ही वास्तव में ''भारवेरर्थगौरवम्'' के सादर उद्घोष को सत्यापित करती हैं। यद्यपि सुभाषितों की संख्या अगणित हैं तथापि ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः''[4] ''हितं मनोहारि च दुर्लभम् वचः''[5] ''समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद् वरम् विरोधोऽपि समं महात्मभिः''[6] ''विचित्ररुपा खलु चित्तवृत्तयः''[7] ''अविवेको परमापदां पदम्''[8] ''सुदुर्लभाः सर्वमनोरमा गिरः''[9] ''वसन्ति हि प्रेम्णि गुणाः न वस्तुनि''[10] इत्यादि कुछ ऐसी ख्याति प्राप्त सूक्तियाँ हैं जो व्यापक अर्थ सम्पन्न होने के कारण सहज रुप से विद्वानों की जिह्वा पर विद्यमान रहती हैं। व्यवहारिकता की कसौटी पर अच्छी तरह परखे गये कथनों में ''शठे शाठ्यं समाचरेत'' की नीति का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है।

किरात में कहा गया है कि जो व्यक्ति शठ के साथ शठता का व्यवहार नहीं करता वह मूर्ख है क्यांकि दुष्ट लोग सीधे–सादे व्यक्ति का रहस्य जानकर उसी प्रकार उसे विनष्ट कर देते हैं जैसे तीक्ष्ण बाण कवचविहीन योद्धा का नाश कर देते हैं।[11] इसी प्रकार उस कथन में कितनी यथार्थता एवं प्रायोगिकता परिलक्षित होती है जिसमें कहा गया है कि जिस व्यक्ति का क्रोध सफल होता है समस्त प्राणी उसके वशीभूत हो जाते हैं इसके विपरीत अमर्षशून्य व्यक्ति के खुश एवं नाराज होने से कुछ भी बनता बिगड़ता नहीं है।[12] अर्थ गौरव सम्पन्ना शैली को प्रस्तुत करने के पीछे भारवि का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है कि इसके माध्यम से वे पाठकों के मानस पटल पर कुछ ऐसे उपादेय विचारों को अंकित करने में सफल रहे हैं जिनकी सहायता से व्यक्ति साधारण मानव की तुच्छ एवं संकीर्ण प्रवृत्तियों का अतिक्रमण करके अपने जीवन को उदात्त बनाने की प्रेरणा प्राप्त कर सकता है। काव्य में वर्णित युधिष्ठिर सदृश पात्रों से सम्बद्ध सूक्तियाँ कुछ ऐसे ही जीवनोपयोगी सिद्धान्तों को प्रस्तुत करती हैं। उदाहरणतः युधिष्ठिर का वह कथन लिया जा सकता है जिसमें वे शास्त्र ज्ञान को शरीर का अलंकार, शान्त स्वभाव को शास्त्र ज्ञान की शोभा, पराक्रम को प्रशान्ति का अलंकरण तथा सुनीति पर चलकर अर्जित सफलता को पराक्रम का भूषण कहते हैं।

शुचि भूषयति श्रुतं वपुः प्रशमस्तस्य भवत्यलंकिया।
प्रशमाभरणम् पराक्रमः स न्यायापादितसिद्धिभूषणः।।[13]

उक्त कथन में जहाँ एक ओर जीवनोत्कर्ष हेतु शास्त्र ज्ञान की अपरिहार्यता को स्वीकार किया गया है वहीं दूसरी ओर नीतिपूर्वक पराक्रम को प्रदर्शित करने पर बल दिया गया है। इसी प्रकार न्यूनातिन्यून शब्दों द्वारा अधिकाधिक अर्थों को अभिव्यक्त करना भी अर्थ–गौरव का प्रमुख वैशिष्ट्य है। उदाहरणतः निम्न पद्य द्रष्टव्य है–

सहसा विदधीत न क्रियामविवेको परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृष्यकारिणम् गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः।।[14]

उक्त श्लोक से पाठकों को जिन उपयागी तथ्यों का बोध होता है वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं, 1. शीघ्रतापूर्वक कोई काम नहीं करना चाहिए, 2. अविवेकी व्यक्ति को विपत्तियाँ घेर लेती हैं, 3. विवेकी के पास समृद्धियाँ अनायास पहुँचती हैं तथा 4. लक्ष्मी गुणी जनों का ही अनुसरण करती है। निश्चय ही भारवि की उक्त कला गागर में सागर भरने वाली कही जा सकती है। अर्थ बहुला सम्पन्न उक्तियों की श्रृंखला के अन्तर्गत साधारण संवादों में राजाओं के निःसर्ग दुर्बोध चरितों एवं उनके अत्यन्त गुप्त तत्त्वों वाले नीति मार्गों को प्रतिबिम्बित किया गया है। राजा के रुप में दुर्योधन के वैशिष्ट्य वर्णन में एक ही पद्य में नीति शास्त्र का एक अध्याय समाहित कर लिया गया है जिसके अनुसार दुर्योधन यथोचित रुप से समय का विभाजन करके, समान आदर के साथ अर्थ, धर्म एवं काम का सेवन करता है, फलतः कभी भी उसके इस पुरुषार्थ त्रय में विरोध उत्पन्न नहीं होता–

असक्तमाराधयतो यथायथं विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।
गुणारागादिव सख्यमीयिवान् न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्।।[15]

किरात के उक्त वैशिष्ट्य से प्रभावित होकर आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि काव्य की तुलना नारियल के फल के साथ की है जिसका बाह्य कलेवर कठोर एवं नीरस होते हुए भी अन्तराल रस युक्त, सरल एवं सुमधुर होता है–

नारिकेलफलसम्मितम् वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरम् सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।[16]

इसी प्रकार ''भारत चरित'' के प्रणेता कृष्ण कवि ने इस कृति की सुन्दर शब्दों में प्रशंसा की है जिसके अनुसार विशाल अर्थों की अभिव्यंजना में सक्षम भारवि की कविता को दीपक के सदृश सन्मार्ग को आलोकित करने वाला तथा पश्चाद्वर्ती कवियों के लिये उपजीव्या कहा गया है–

प्रदेश वृत्त्यापि महान्तमर्थम् प्रदर्शयन्ति रसमादधाना।
सा भारवेः सत्पथदीपिकेव रम्या कृतिः कैरिव नोपजीव्या।।[17]

भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार है। अतएव वे अपने भावों, कल्पनाओं एवं अनुभूतियों को सजीव रुप में प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं। कवि की भाषा में अर्थगौरव के प्रति एक विशेष आग्रह पदे–पदे दिखाई देता है। दीर्घ समासों का प्रयोग न होते हुए भी अर्थ गौरव युक्त पदावली का प्रयोग हुआ है। अपनी सूक्ष्म निरीक्षणकारिणी दृष्टि द्वारा भारवि ने पात्रों तथा विषय के अनुकूल शब्द योजना की है। द्रौपदी तथा भीमसेन के ओजपूर्ण भावों, युधिष्ठिर की नैसर्गिक शान्तिप्रियता एवं नीतिपरायणता, अप्सराओं की काम–क्रीड़ा, अर्जुन की तपश्चर्या तथा किरात के साथ युद्ध, ऋतुओं एवं प्राकृतिक सौन्दर्य आदि विषयों को कवि ने बड़े ही प्रभावी एवं सरस ढंग से चित्रित किया है। किरात में जहाँ कहीं भी लघु समासों का प्रयोग हुआ है वहाँ अर्थों की सुगमता पर्याप्त रुप में दृष्टिगत होती है। उदाहरण स्वरुप दुर्योधन के प्रति सैनिकों की राजभक्ति का बहुत ही सुबोध वर्णन द्रष्टव्य है–

महौजसो मानधनार्चिताः धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
न संहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः प्रियाणि वांछन्त्यसुभिः समीहितुम्।।[18]

तात्पर्य यह है कि अत्यन्त पराक्रमी होने के साथ–साथ दुर्योधन के सैनिकों का परिगणन श्रेष्ठ धनुर्धारियों में होता है। बड़े–बड़े युद्धों में अपना लोहा मनवा कर वे निर्मल यश अर्जित कर चुके हैं। समय–समय पर राजकीय सम्मान पाने वाले ये स्वभिमानी सैनिक किसी बाह्य प्रलोभन में न पड़कर कदापि अपने राजा के विरुद्ध न तो संगठित होते हैं और न ही उसके विपरीत आचरण करते हैं। वे तो सदैव अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने स्वामी का हितसाधने में ही संलग्न रहते हैं। उक्त पद्य में निश्चय ही भारवि ने छोटे–छोटे पदों के माध्यम से एक आदर्श सेना के बृहद्स्वरुप को बड़ी कुशलता से रेखांकित किया है। वास्तव में कोई भी राजा इस प्रकार की सेना का आधिपत्य पाने के लिये क्यों लालायित न होगा?

इसी प्रकार एक अन्य दृष्टान्त में महामुनि व्यास को शब्द शक्ति द्वारा साक्षात् प्रकट कर दिया गया है। आसनस्थ भगवान् व्यास के शरीर से प्रस्फुटित तेजो राशि ऊपर की ओर प्रसारित हो रही है, उनका वर्ण ईषत्नील है। शिर पर पीत वर्ण की जटाएं सुशोभित हो रही है तथा शरत्कालीन चन्द्र के समान उनका स्वरुप बहुत ही आकर्षक है।[19] जल विहार करती हुई अप्सराओं के चित्रण द्वारा कवि ने नृत्य–वाद्य के मनोहर स्वरुप को प्रस्तुत किया है। तदनुसार जल विहार करती हुई अप्सराओं के करतलों द्वारा क्रमशः जल पर किये जा रहे आघात के कारण मृदंग की गम्भीर ध्वनि उत्पन्न हो रही है और कम्पनशील स्तन नृत्य की शोभा को धारण कर रहे हैं।[20] इसी प्रकार के अनेकों उदाहरण किरात में उपलब्ध होते है जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि भारवि प्रसंगानुकूल पदावली का प्रयोग करने में भी अत्यन्त कुशल हैं। अलंकारों के प्रयोग में भी भारवि की प्रवीणता उल्लेखनीय है। किरात में अर्थगौरव की विशिष्टता हेतु रुचिकर अलंकारों का प्रयत्नपूर्वक सन्निवेश किया गया है। शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों को काव्य में यथास्थान समुचित स्थान दिया गया है। उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, काव्यलिंग, निदर्शना, समासोक्ति,

स्वभावोक्ति, अतिशयोक्ति तथा रुपक आदि अलंकारों का कवि ने सफल एवं वैदुष्यपूर्ण प्रयोग किया है। भारवि के उपमानिबन्धन कौशल से प्रभावित होकर समालोचकों ने उन्हें ''आतपत्र भारवि'' की उपाधि से अलंकृत किया है। कैलास पर्वत के वर्णन प्रसंग में एक स्थान पर कहा गया है कि वायु के झकोरों से अन्तरिक्ष में मण्डलाकार में उड़ते हुए पीत वर्ण के पराग कनकमय आतपत्र की शोभा को धारण कर रहे हैं–

उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मादुद्धूतः सरसिजसंभवः परागः।
वात्याभिर्वियति विवर्तितः समन्तादाधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्।।[21]

अर्थान्तरन्यास भारवि का प्रिय अलंकार होने के कारण किरात में इसका बहुलता से प्रयोग हुआ है। इस अलंकार के संयोजन से ही अनेक अर्थगरिमामयी हृदयस्पर्शी सूक्तियों का उद्भव काव्य में हुआ है। उदाहरण के रुप में अर्थान्तरन्यास अलंकार से सुसज्जित एक पद्य को उद्धृत किया जा रहा है–

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतिरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।।[22]

अर्थात् समुद्र पर्यन्त पृथ्वी पर एकछत्र शासन करने वाला दुर्योधन सर्वसाधनसम्पन्न होने पर भी साधनों की कमी वाले अरण्यवासी युधिष्ठिर से आने वाले भय की चिन्ता से आक्रान्त रहता है क्योंकि बलवानों के साथ किया गया विरोध दुःखद परिणामों को लाने वाला होता है।

उपसंहारः अन्ततः निष्कर्षरुपेण यही कहा जा सकता है कि महाकवि भारवि की साहित्य साधना वस्तुतः अप्रतिम है। इसी के परिणामस्वरुप वे संस्कृत साहित्य के विद्वानों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल रहे हैं। अर्थगाम्भीर्य से ओत–प्रोत काव्यलेखन की अभिनव शैली के उद्भावक के रुप में उन्होंने विद्वानों में अपनी मौलिकता का लोहा तो मनवाया ही है साथ में पश्चाद्वर्ती अनेकों विद्वान कवियों ने इस शैली को सहर्ष अपनाते हुए विविध काव्य कृतियों की रचना की है। अर्थगाम्भीर्यपूर्ण शैली का आश्रय लेते हुए विद्वान कवि भारवि ने शाब्दिक परिमाण में अल्प होते हुए भी अपनी वैदुष्य पूर्ण सूक्तियों के माध्यम से जिन विविधविषयी उपदेशों को प्रसारित किया है महत्त्व की दृष्टि से वे वास्तव में सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक हैं।

सन्दर्भ सूची

1. किरात. 14.3
2. वही 2.27
3. वही 1.3
4. वही 1.2
5. वही 1.4
6. वही 1.8
7. वही 1.37
8. वही 2.30
9. वही 14.5
10. वही 8.37
11. वही 1.30
12. वही 1.33
13. वही 2.32
14. वही 2.30
15. वही 2.11
16. वही मल्लीनाथ टीका पृष्ठ–1
17. वही प्रथम सर्ग व्याख्याकार डॉ. राजेन्द्र मिश्र पृष्ठ–27
18 किरात. 1.19
19. वही 3.1
20. वही 8.43
21. वही 5.39
22. वही 1.23